P. R. No.: DL(S)-17/3082/2012-14
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473
Date of Post : 27-28

-पर्यूषण महापर्व पर लॉस एंजिलिस में अपना उद्‌बोधन प्रवचन करते हुए पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज।

-योगी अरूण द्वारा योग-ध्यान प्राणायाम के रहस्यों को समझता हुए जन समुदाय। (जैन मंदिर लॉस एंजिलिस)।

प्रकाशक व मुद्रक : **श्री अरुण तिवारी,** मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.)
के.एच.–57 जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

कवर पेज सहित
36 पृष्ठ

मूल्य 5.00 रूपये
अक्टूबर, 2014

रूपेरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

दीपावली की शुभकामनाएं

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वर्ष : 14 अंक : 10 अक्टूबर, 2014

: मार्गदर्शन :
पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

: संयोजना :
साध्वी वसुमती
साध्वी पद्मश्री

: परामर्शक :
श्रीमती मंजुबाई जैन

: सम्पादक :
श्रीमती निर्मला पुगलिया

: व्यवस्थापक :
श्री अरूण तिवारी

वार्षिक शुल्क : 60 रुपये
आजीवन शुल्क : 1100 रुपये

: प्रकाशक :
मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने, नई दिल्ली - 110013
फोन नं.: 26315530, 26821348
Website: www.rooprekha.com
E-mail: contact@manavmandir.info

इस अंक में

01. आर्ष-वाणी - 5
02. बोध-कथा - 5
03. शाश्वत स्वर - 6
04. अध्यात्म-चर्चा - 7
05. गजल - 12
06. चिंतन-चिरंतन - 10
07. स्वागत गीत - 12
08. दिशा-निर्देश - 13
09. रत्न-चिकित्सा - 16
10. वेताल पच्चीसी - 18
11. अभिनंदन गीत - 19
12. स्वास्थ्य - 20
13. जब से जोड़ी... - 22
14. बोलें-तारे - 23
15. समाचार-दर्शन - 25
16. झलकियां - 31

रूपरेखा-संरक्षक गण

श्री वीरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युष्टन, अमेरिका
डॉ. प्रवीण नीरज जैन, सेन् फ्रेंसिस्को
डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास
डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी, न्यूयार्क
श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी
श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी
श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैंकाक
श्री सुरेश सुरेखा आबड़, शिकागो
श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना
श्री कालू राम जतन लाल बरड़िया, सरदार शहर
श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी, अहमदगढ़ वाले, बरेली
श्री कालूराम गुलाब चन्द बरड़िया, सूरत
श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर
श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली
श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली
श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली
श्रीमती मंगली देवी बुच्चा धर्मपत्नी स्व. शुभकरण बुच्चा, सूरत
श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा
श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार
श्री हरबंसलाल ललित मोहन मित्तल, मोगा, पंजाब
श्री पुरुषोत्तमदास बाबा गोयल, सुनाम, पंजाब
श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री बीरबल दास सिंगला,
श्री अशोक कुमार सुनीता चोरड़िया, जयपुर
श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़
श्री देवकिशन मून्दडा विराटनगर नेपाल
श्री दिनेश नवीन बंसल सुपुत्र
श्री सीता राम बंसल (सीसवालिया) पंचकूला
श्री हरीश अलका सिंगला लुधियाना पंजाब
श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास
श्री चैनरूप सुशील कुमार पारख, हनुमानगढ़
श्री श्यामलाल वीणादेवी सातरोदिया, हिसार

श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युष्टन
श्री हेमेन्द्र, दक्षा पटेल न्यूजर्सी
श्री प्रवीण लता मेहत्ता ह्युष्टन
श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा
श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार
श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट
श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर
डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई
श्री कमलसिंह-विमलसिंह बैद, लाडनूं
श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम
श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर
श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद
श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली
डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन, नोएडा
श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़
श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर
श्री देवराज सरोजबाला, हिसार
श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार
श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद
श्री रमेश उषा जैन, नोएडा
श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा
श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले
श्री संपतराय दसानी, कोलकाता
लाला लाजपत राय, जिन्दल, संगरूर
श्री आदीश कुमार जी जैन, दिल्ली
मास्टर श्री बैजनाथ हरीप्रकाश जैन, हिसार
श्री केवल कृष्ण बंसल, पंचकूला
श्री सुरनेश कुमार सिंगला, सुनाम, पंजाब
श्री बुधमल राजकरण, तेजकरण सिंघी, सरदार शहर
श्रीमती लक्ष्मीदेवी चिंडालिया, सरदार शहर

आर्ष-वाणी

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन,
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा।

-श्रीमद्भगवद्गीता

जैसे प्रज्वलित अग्नि ईधन को भस्म कर देती है, उसी तरह से ज्ञानरूपी अग्नि भौतिक कर्मों के समस्त फलों को जला डालती है।

बोध-कथा

तीन तारों की धुन

नार्वे में पैदा हुए ओल बर्नेमन बुल विश्वविख्यात वायलिन वादक थे। अनेक विश्व प्रसिद्ध कंपनियां उन्हें अपने कार्यक्रम में बुलाने को आतुर रहती थीं। एक दिन पैरिस की एक कंपनी ने कोई बड़ा कार्यक्रम करने की योजना बनाई। वह कुछ समय से घाटे में चल रही थी। कार्यक्रम का मकसद पैसा जुटाना था। लेकिन आयोजक इस बात से चिंतित थे कि यदि कार्यक्रम असफल हो गया तो कंपनी बिल्कुल ही डूब जाएगी। वह कार्यक्रम को सफल बनाने के तरीके ढूंढने लगे। सब अपनी-अपनी राय देने लगे। किसी ने प्रसिद्ध अभिनेता और अभिनेत्री को नृत्य के लिए आमंत्रित करने की सलाह दी, किसी ने जादूगर बुलाने के लिए कहा तो कोई कुछ और। सहसा एक युवा आयोजक बोला- 'अगर बुल को वायलिन बजाने के लिए बुलाया जाए तो कार्यक्रम की सफलता में संदेह नहीं रह जाएगा।' बुल ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया। वह कंपनी के घाटे से परिचित थे। उन्होंने सोचा कि यदि उनकी वजह से किसी संस्था अथवा व्यक्ति को लाभ पहुंचता है तो उन्हें अवश्य साथ देना चाहिए। कार्यक्रम के दिन हॉल खचाखच भरा था। लोग बुल की एक झलक पाने के लिए बेताब थे। बुल ने वायलिन पर धुन बजानी शुरू की। पर अभी धुन निकली ही थी कि अचानक वायलिन का तार टूट गया। उन्होंने बिना घबराये तीन तारों पर अपनी नई धुन बनाई और उसे मन से बजाते रहे। जब कार्यक्रम समाप्त हुआ तो उन्होंने देखा कि श्रोता अपने स्थान पर खड़े होकर उनके सम्मान में तालियां बजा रहे थे। इससे न सिर्फ कंपनी की साख बन गई बल्कि बुल को भी एक शानदार धुन मिल गई।

शाश्वत स्वर

जीवन के संघर्ष हमें मूल्यवान बनाने के ईश्वरीय उपकरण हैं

एक मंदिर का निर्माण, हो रहा था। कुछ सुंदर, बड़े पत्थर मंगवाए गए और मूर्तिकार को सौंप दिए गए। उसने सबसे पहले एक पत्थर पर छेनी रख कर हथौड़ी मारी। पत्थर पहले ही प्रहार में टूट गया। उसने दूसरे और फिर तीसरे पत्थर को आजमाया। जो पत्थर बार-बार टूटे और ज्यादा छोटे टुकड़ों में बंट गए, वे फर्श पर लगा दिए गए। जो घिसनी का घर्षण सहन कर थोड़ा-बहुत आकार ग्रहण कर सके, वे दीवारों पर सजा दिए गए। एक पत्थर ऐसा था जो छेनी-हथौड़ी के प्रहार को चुपचाप सहता रहा, लेकिन अपने अस्तित्व को बनाए रहा। मूर्तिकार ने उसे कई तरह की छेनियों से तराशा और कई तरह की घिसनियों से घिसा। पत्थर सब कुछ सहता गया पर टूटा नहीं। मंदिर बन चुका था, अब देव प्रतिमा की स्थापना होनी थी। लेकिन पत्थरों को उनका सबसे सहनशील साथी कहीं नजर नहीं आ रहा था। तभी देव प्रतिमा के रूप में उसे लाया जाता देख, कुछ सुखद और कुछ ईर्ष्यायुक्त आश्चर्य से भर गए। उससे उसके सौभाग्य का कारण पूछने लगे। उत्तर में वह बड़े स्नेह से बोला- 'हम स्वयं अपने भाग्य के निर्माता, नियंत्रणकर्ता और स्वामी हैं। मैंने हर उपकरण की मार को सहकर अपने आपको टूटने से बचाया, इसीलिए मुझे ये सौभाग्य प्राप्त हुआ।'

समाज में हमारा क्या स्थान होगा, यह इस पर निर्भर करता है कि हम नियति के कितने प्रहारों को सहकर स्वयं को मानसिक और आत्मिक रूप से अक्षत बनाए रखने में सक्षम हैं। संघर्ष हमें कितनी चारित्रिक मजबूती देते हैं। यदि हम जीवन में आने वाली बाधाओं को खुद को तराशने वाला ईश्वरीय उपकरण मान लें तो अपने व्यक्तित्व को देव प्रतिमा के सामान पूज्य बना सकते हैं। यदि उन्हें अवसाद और क्षोभ का निमित्त बना लें तो फिर फर्श पर लगे पत्थरों की तरह नगण्य जीवन ही जी पाएंगे।

एडिसन, कोलंबस और रामानुजन जैसे विद्वानों की खोजें भी असफलता की सीढ़ी चढ़े बिना सफलता की छत तक नहीं पहुंची थीं। न ही गांधी, नेल्सन मंडेला और लिंकन जैसे सुधारकों के प्रयासों पराजयों या अवमाननाओं से गुजरे बिना मंजिल तक पहुंच सके थे। दृढ़ संकल्प शक्ति ही वह गुण है जो किसी मनुष्य को विजेता बनाती है। इसीलिए कहा जाता है कि सत्संकल्पों की राह में आने वाले संघर्षों को तो आमंत्रित करना चाहिए क्योंकि वे हमें मूल्यवान बनाने के ईश्वरीय उपकरण हैं।

कहा गया है- 'सोना, सज्जन, साधु जन, टूटि जुरे सौ बार। दुर्जन कुंभ कुम्हार के, एकै धका इरार।' अर्थात सोना मूल्यवान है क्योंकि वो टूट जाए तो उसे बार-बार जोड़ा जा सकता है, लेकिन कुम्हार के घड़े को साधारण माना जाता है क्योंकि वह एक ही झटके में टूट कर अनुपयोगी हो जाता है।

-निर्मला पुगलिया

विश्व-ज्योति भगवान् महावीर

○ पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी

अनादिकाल से असंख्य आत्माएं जड़ की कारा से मुक्ति के लिए सतत संधर्षरत हैं, विभाव के आवरणों को तोड़कर अपनी स्वभाव सत्ता का प्रकाशन करती आ रही हैं। इनमें से कुछ आत्माएं उस बिन्दु तक पहुंच जाती हैं जो बन्धन-मुक्ति की सन्धि है और उसे तोड़कर अपनी शुद्ध-बुद्ध सत्ता में स्थित होकर दूसरों का मार्गदर्शन करती हैं। संसार के हर देश में, हर काल में ऐसी परम आत्माएं हुई हैं जिन्हें तीर्थंकर, पैगम्बर, अर्हत् या बुद्ध आदि विविध नामों से मण्डित किया जाता रहा है। ऐसी ही एक परम आत्मा विश्व जीवन के इतिहास में महावीर के नाम से प्रख्यात है जिसे जैन परम्परा अपना चौबीसवां तीर्थंकर मानती है।

इतिहास साक्षी है कि ऐसी आत्माओं का प्रादुर्भाव सदा ऐसे युगों में हुआ है जो मानव-चेतना की तिमिराच्छन्न काल-निशा रहे हैं। महावीर का युग भी एक ऐसा युग था जिसमें धर्म के नाम पर स्वयं नरक के सौदे होने लगे थे, खर्चीले एवं हिंसक कर्म-काण्ड सर्वत्र हो रहे थे, जाति एवं वर्णभेद ने अत्याचार एवं शोषण की एक असहनीय स्थिति पैदा कर दी थी, मानवीय स्वतंत्रता और समानता के स्थान पर एकतन्त्रात्मक राजसत्ता ने दासता एवं उत्पीड़न, वैषम्य एवं विवशता के महारौरव का सृजन कर डाला था जिससे आहत होकर युग-चेतना कराह उठी थी।

जन्म, निर्वाण और उपदेश

उत्तरी बिहार में वैशाली नामक लिच्छवि जाति के क्षत्रियों का गणतन्त्र था, जिसके अन्तर्गत क्षत्रिय-कुण्डग्राम के अधिशास्ता सिद्धार्थ एवं क्षत्रियाणी त्रिशला के घर भगवान महावीर ने जन्म लिया। माता-पिता ने उनका नाम वर्द्धमान रखा। तीस वर्ष की आयु में भगवान सत्य की खोज में निकल पड़े। बारह वर्ष का उनका दीर्घ तपस्या-काल वीरत्व की अमर गाथा है, जिसकी एक-एक घटना रौंगटे खड़े कर देनेवाली है। चण्डकौशिक नामक सर्प ने उन्हें डंसा, संगम नामक देव ने उन्हें एक रात्रि में बीस मारणान्तिक परीषह दिए, एक गोपालक

ने उनके कानों में लौहशलाका आर-पार ठोंक दी, वज्रभूमि के आदिवासी कोल-किरातों ने उन्हें असह्य यन्त्रणाएं दीं, राजपुरुषों ने सन्देहवश मारा-पीटा और फांसी पर चढ़ा दिया, पशु-पक्षियों ने उन्हें ध्यानावस्था में पीड़ित किया, किन्तु प्रभु हिमालय की भांति निष्कम्प, सतत साधना-निमग्न रहे। अंततः ऋजुबालिका नदी के तट पर उन्हें परम ज्ञान की प्राप्ति हुई जिसे परम्परा कैवल्य कहती है। कैवल्य के बाद तीस वर्षों तक प्रभु ने देश-भर के विविध प्रदेशों में भ्रमण कर अगणित प्राणियों को धर्म-देशना दी। अन्त में पावापुरी में बहत्तर वर्ष की आयु में वे सिद्ध, बुद्ध और मुक्त हुए। भगवान का निर्वाण दिवस प्रतीक है उनकी महाकरुणा का, मानवीय एकता की उद्भावना का, जाति-वर्णभेद-मुक्त स्वस्थ समाज की संरचना के उनके पावन आदर्श का, अहिंसा, अपरिग्रह एवं अनेकान्त की त्रिवेणी का और बन्धन-मुक्ति का। स्वः पर कल्याण की साकार प्रतिमा भगवान महावीर का जीवन त्याग और तप, संयम एवं साधना की एक प्रेरणास्पद गाथा है। सुकरात ने कहा- दर्शन मृत्यु की खोज है। महावीर हो या बुद्ध, कृष्ण हो या क्राइस्ट, जरथुस्त्र हो या लाओत्जे-खोज सबकी एक ही रही है- उसकी जो अमर है, शाश्वत है, ध्रुव है, नित्य है, अनन्य है, परम है। ऐन्द्रिय प्रतीति के पार जो अतीन्द्रिय सत्य है, गुणों के आवर्त के पार जो गुणातीत सत्ता है, सारे नाम-रूपों के पार जो अनाम अरूप है, उसकी खोज में सब निकले हैं और वहीं पहुंचकर सबकी चेतना को विश्रान्ति मिली है। महावीर ने कहा है- लोक में जो अनन्य एवं परम को जान लेता है वही विरक्त होता है, उपशान्त होता है, समित, सहित और सचेतन होता है। उसी की निष्पत्ति मानसिक जीवन के स्तरों पर वीतरागता में होती है जो अनित्य एवं नश्वर, गुणात्मक संवेदना में राग-द्वेषमयी चेतना की मूर्च्छा का टूटना है। वह जो अनेक में एक को जानता है, वह उस एक में अनेक को देख लेता है। जो भीतर और बाहर की एकता की परिज्ञा कर लेता है वह द्वंद्वातीत हो जाता है, शाश्वत शान्ति में स्थित हो जाता है। वही तो निर्वाण है। वह सबमें अपने को तथा अपने में सबको एक परम अनन्त आत्मसत्ता के रूप में साक्षात्कार कर सबका मित्र हो जाता है, दूसरों का अतिक्रमण करनेवाली अहंमूलक स्वार्थवृत्ति से विरत हो जाता है। यही सार है विश्व के सारे धर्मों का। यही महावीर के शब्दों में धर्म है। उन्होंने कहा- सभी अर्हतों और बुद्धों का, जो अतीत में हुए हैं, वर्तमान में हैं और भविष्य में होंगे, यही कहना है, यही उनकी प्ररूपणा है, प्रज्ञापना है कि सारे प्राणियों, भूतों, जीवों का अतिक्रमण न करना, उन पर सत्ता स्थापित न करना, उन पर शक्ति का प्रयोग न करना, उन्हें पीड़ित और उद्विग्न न करना-यही धर्म है, नित्य है, शाश्वत है।

अहिंसा और अपरिग्रह

महावीर की अहिंसा मात्र मरण का नकार नहीं है, वह जीवन के साथ उसकी मूल सार्वभौम सत्ता के स्तर पर सम्पूर्ण तादात्म्य है। अतः वह जीवन के प्रतिपक्ष में कहीं भी खड़ी नहीं हो सकती। अगर जीवन सबका है, सबको जीवन जीने का अबाध अधिकार है तो अपने जीवन के लिए दूसरों को जीवन-साधनों से वंचित करना, जीवनाधिकार का उल्लंघन है। जीवन-साधनों पर व्यक्तिगत स्वामित्व दूसरों को उनसे वंचित करने का कारण है, अतः भगवान् ने अहिंसा के साथ अपरिग्रह को अनिवार्य माना है, जो अहिंसा का ही भौतिक जीवन-साधनों के क्षेत्र में विस्तार है। मार्क्स से पचीस सौ वर्ष पूर्व महावीर ने प्रजातीय विभेद, गरीब-अमीर की सीमा-रेखाओं से मुक्त, स्वामित्व-मुक्त अर्थ-व्यवस्था तथा वर्गहीन समाजतन्त्र की अवधारणा अहिंसा के अन्तर्गत प्रस्तुत की थी जो समाजशास्त्रियों एवं मनस्तत्त्व-वेत्ताओं के लिए मननीय है।

अनेकान्त

महावीर की अहिंसा का जीवन के भौतिक साधनों के क्षेत्र में विस्तार अपरिग्रह है और विचार के जगत में इसी का विस्तार अनेकान्त है। हम किसी का अतिक्रमण विचार के जगत् में भी उसे गलत घोषित करके न करें, बल्कि अपने को उसकी स्थिति में रखकर उसकी आंखों से उसके सत्य को देखें तो पाएंगे कि सन्दर्भों की सापेक्षता के सांचे में उसके सत्य का अपना स्थान है। सत्य अपनी निरपेक्ष सत्ता में एक है, लेकिन सापेक्ष स्तरों पर उसका साक्षात्कार अन्तर्मुखी है और ये अनन्त साक्षात्कार उस मूल परम सत्य की ही अभिव्यक्ति होने के कारण सत्य हैं। हमें सत्य को सर्वत्र ग्रहण करना चाहिए। जो सत्यग्राही होगा वही सत्याग्रही होने का अधिकारी है। अन्यथा वह विचारों के जगत् में अपने अहं की वेदी पर दूसरों की सत्ता का हन्ता होगा, हिंसक होगा।

महावीर के अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त के सिद्धान्तों की मूल्यवत्ता आज के लोकजीवन में और भी अधिक है जबकि विषमता, भ्रष्टाचार, शोषण, संघर्ष, साम्प्रदायिक उन्माद से मानवता पीड़ित है। महावीर का पावन सन्देश शान्ति एवं सौजन्य, मैत्री एवं करुणा, सहयोग एवं उदारतापूर्ण जीवन जीने की एक पवित्र प्रेरणा है जिसका अनुसरण ही मानवता को भावी संघर्ष और विनाश की विभीषिका से बचा सकता है।

-अच्छी किताब वह है, जो आशा से खोली जाए एवं लाभ से बंद की जाय।

-स्वामी विवेकानंद

धर्म का उद्देश्य

○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

क्रिया एक ही होती है, पर उसके उद्देश्य भिन्न-भिन्न होते हैं। जो क्रिया जिस उद्देश्य से की जाएगी, उसका परिणाम भी वैसा ही आएगा।

धर्म करने वालों का भी सबका समान उद्देश्य नहीं होता। कुछ लोग इहलौकिक समृद्धि के लिए धर्म करते हैं। तो कुछ लोग पारलौकिक सुख-सम्पत्ति के लिए धर्माचरण करते हैं। कतिपय लोग पूजा, प्रतिष्ठा, श्लाघा, प्रशंसा, कीर्ति के लिए धार्मिक क्रियाकांडों में समय लगाते हैं। इस प्रकार के हल्के उद्देश्यों से किया जाने वाला धर्म महत् परिणाम नहीं लाता। वस्तुतः तो वह धर्म की कोटि में परिगणित ही नहीं होता।

एक बार एक महात्मा एक धार्मिक व्यक्ति की खोज में निकले। उनको एक प्रवचन पंडाल में ले जाया गया, जहां एक गुरुजी उपदेश फरमा रहे थे और श्रोतागण सुन रहे थे। महात्मा ने कहा- 'यहां धोखा-धड़ी है, यहां धर्म नहीं हो सकता।' आगे बढ़ गए। एक स्थान पर कीर्तन हो रहा था। बोल पड़े, 'यहां प्रदर्शन है। प्रदर्शन और धर्म में कोई तालमेल नहीं है।' इसके बाद महात्माजी को एक यज्ञ-बाड़े में ले जाया गया, जहां पर नाना प्रकार की आहूतियां दी जा रही थीं। महात्मा ने कहा- 'यहां सौदा है। धर्म में कभी सौदा नहीं होता, वह तो सर्वथा अनासक्त भाव से किया जाता है।'

महात्माजी निराश होकर लौट रहे थे कि उन्हें जंगल में एक व्यक्ति दिखाई दिया जो ध्यानस्थ खड़ा था, जिसको एक काला नाग काट रहा था, फिर भी शान्त-मौन, समता-लीन।

महात्मा को लगा, यह व्यक्ति वस्तुतः धार्मिक है- कितना निस्पृह और अनासक्त है। कितना सहज और कामना-शून्य है। इसमें न प्रदर्शन है, न किसी प्रकार की आकांक्षा, न दूसरों को ठगने की मनोवृत्ति, न भोग है, न त्याग का अभिमान। न ममकार है, न अहंकार। न आसक्ति है, न इच्छा। केवल सहजता और शान्ति। यहां है धर्म का मूर्त रूप। यह है धर्म का ज्वलन्त उदाहरण।

यह किसी परम्परा पर कटाक्ष नहीं है, किसी धर्म विशेष पर व्यंग्य नहीं है और न ही किसी सम्प्रदाय विशेष का अपमान। लेकिन सच्चाई है।

धर्म जितना बाह्य क्रियाकांड़ों पर निर्भर नहीं करता, उतना ही आन्तरिक भावनाओं पर आधारित रहता है। धर्म के साथ न कोई शर्त है और न कोई सौदेबाजी ही। धर्म अपने आप में एक स्वतंत्र और निरपेक्ष घटना है। धर्म के साथ चमत्कार को जोड़कर धर्म का अस्तित्व ही खतरे में डाल दिया जाता है। जहां धर्म से चामत्कारिक घटना घट गई वहां धर्म की जय-जयकार हो गई और जहां धर्म से कोई स्वार्थ सिद्ध नहीं हुआ, कोई चमत्कार नहीं घटा, वहां धर्म की धज्जियां उड़ाई जाती हैं।

किसी भी वस्तु के प्रति अतिरिक्त धारणा बनाना आस्था नहीं, अंधविश्वास है। अंध-श्रद्धा वाले व्यक्ति जितनी जल्दी आस्थाशील होते हैं उतनी ही जल्दी श्रद्धा को डुबाने वाले भी। ऐसी श्रद्धा वाले व्यक्तियों ने धर्म को जितना विकृत और बदनाम किया है उतना नास्तिकों ने भी नहीं किया।

लोग अकसर कहते हुए सुने जाते हैं कि हमारा धर्म इतना अधिक शक्तिशाली है कि उसके प्रभाव से उलटती हुई ट्रेन रुक गई, गिरती हुई बिजली से बचाव हो गया। हमारे इष्टदेव ने हमें अमुक-अमुक खतरों से बचा लिया अमुक आपत्तियों को निरस्त कर दिया, जबकि ये सब घटनाएं अनायास स्वाभाविक ढंग से घटती है।

जो व्यक्ति अच्छे का श्रेय अपने धर्म या धर्म-गुरु को देता है वह बुरे का दोषारोपण भी इन्हीं पर कर देगा। जीवन में छिटपुट घटनाएं घटते ही उसकी सारी आस्था क्षणों में विलीन हो जाएगी। संसार में जो कुछ भी अच्छा या बुरा घटता है, अपने कर्मों के अनुसार और नियति की प्रबलता से घटती है। धर्म को उसके साथ भागीदार बनाना, यह उसके साथ न्यायसंगत नहीं होगा।

धर्म का उद्देश्य नितान्त आध्यात्मिक होना चाहिए। जिस व्यक्ति में जिस कार्य की क्षमता है उससे वही कार्य कराया जा सकता है, दूसरा नहीं। अमृत अमृत का ही कार्य कर सकेगा, बिष का कभी नहीं।

चाहे धर्म में अनन्त क्षमताएं हैं पर भौतिक सिद्धियों और उपलब्धियों की क्षमता उसमें नहीं है क्योंकि उसका गुण ही दूसरा है। इसलिए धर्म को प्रलोभन और भय का केन्द्र नहीं मानना चाहिए।

एक बुढ़िया एक हाथ में जलता लैम्प और दूसरे हाथ में पानी का घड़ा लिये बाजार बीच घूम रही थी। लोगों ने उससे पानी के घड़े और जलते लैम्प के बारे में पूछा तो उसने बताया कि लैम्प तो रखती हूं स्वर्ग में आग लगाने के लिए और पानी का घड़ा रखती हूं नरक की आग बुझाने के लिए। लोगों ने आतुरता से कहा- 'बुढ़िया! स्वर्ग में आग लगाने और नरक की आग बुझाने से तुम्हें क्या मिलेगा?' उसने कहा- 'बन्धुओ! मेरे ऐसा करने

से धर्म-क्रिया का विकृत रूप सदा के लिए खत्म हो जाएगा। क्योंकि जो लोग स्वर्ग के प्रलोभन और नरक के भय से धर्म करते हैं उनके लिए प्रलोभन ओर भय का कोई कारण नहीं रहेगा। उनका धर्म सर्वथा निस्पृह भाव से होगा।' सुनने वाले स्तब्ध थे बुढ़िया की बुद्धिमत्ता पर।

सचमुच प्रलोभन और भय-बिहीन धर्म से ही यथार्थ परिणाम आने वाला है।

स्वागत गीत

सात समंदर की ये लहरें प्रभु के पांव पखार रही
हंस हंस कर जीवन वार रही
गण मंदिर की दीप शिखाएं तुमको सतत निहार रही
है जग मग ज्योति उभार रही।।

पुलकित है धरती का कण-कण नभ में उजियाला छाया
भरी उमंगे जड़ चेतन में, देख तुम्हारी यह माया
इस उत्सव पर अमल आरती हम सब आज उतार रही।।

मानवता की सेवा हित यह जीवन न्यौछावर सारा
गूंज रहा प्रत्येक दिशा में भगवन तेरा ही नारा
विश्व बधाए, हम क्या गाएं केवल शब्द उचार रहीं।।

मिटे विषमता जन जन की अन्याय और शोषण जगसे
समता का यह पाठ पढ़ाते मानव मंदिर के मग से
आशा भरी नजर तुम पर बस सारी दुनिया डाल रही।।

नए-नए आयाम खोलकर मानवता की सेवा की
दे समाज को नया मोड़ जड़ जनता की जड़ता हरली
समयोचित निर्देशन पा नारी निज रूप निखार रही।।

युगों-युगों इस धरती का कल्याण करो हे युग नेता
महावीर के शासन की संभाल करो हे दृढ़ चेता
निष्कारण यह करूणापतितों को अब पार उतार रही।।

तर्ज- हम भारत की

सम्यक ज्ञान, दर्शन और चारित्र से ही सम्यक बदलाव संभव

○ डॉ. रिखब चन्द जैन

परिवर्तन प्रकृति का अपरिवर्तनीय नियम है। प्रति क्षण, प्रति पल, दृश्य-अदृश्य रूप में प्रकृति में बदलाव की प्रक्रिया निरन्तर जारी है और जारी रहेगी। जड़-चेतन सभी पुदग्ल, अणु, परमाणु सभी निरन्तर बदलते हैं।

मानव ही नहीं प्रत्येक जीवात्मा जन्म से ही, शरीर में हर क्षण बदलाव शुरू हो जाता है और निरन्तर मृत्यु पर्यन्त चलता है। निरन्तर परिवर्तन तो मन, दिमाग, दिल और आत्मा की स्थिति में भी होता रहता है। जिस क्षण बदलाव बन्द हुआ तो जीवन भी खत्म। चेतना बन्द। शिशु अवस्था से शरीर में वृद्धि होना, घुटनों के बल चलना, खड़ा होना, दौड़ना, बोलना, समझ पकड़ना, बाल्यकाल से किशोर अवस्था आदि। इसी तरह विभिन्न अवस्थायें जीवन यात्रा की समाप्ति तक बदलाव की बदौलत ही होती है।

शारीरिक परिवर्तन से भी अधिक गति मन परिवर्तन की है। हवा, बिजली, ध्वनि से भी अधिक स्पीड़ होती है मन के परिवर्तन की, भाव परिवर्तन की, दिमाग में विचारों के बदलाव की।

जीव आत्मा ही नहीं, चेतन्ता ही नहीं, जड़ पदार्थों में भी निरन्तर परिवर्तन होता है। यह नश्वर शरीर मिट्टी से बना। पंचभूतों से बनता है और पंचभूतों में मिट्टी में मिल जाता है। इसलिए कहते है- **"माटी कहे कुम्हार से तूं क्या रोंदें मोह, इक दिन ऐसा आयेगा मैं रोदूंगी तोंय"।** तात्पर्य यह है कि जो यह शरीर है वह मिट्टी में बदल जायेगा, मिट्टी जिस पर हम खड़े है, रौंदते है, वही मिट्टी खेत में अनाज का रूप प्राप्त कर मानव का वीर्य बनती है, वीर्य से 'जीव उत्पति' होकर मनुष्य रूप लेती है।

अतः परिवर्तन एक स्वाभाविक, प्राकृतिक, नेचुरल क्रिया है। इसे कोई रोक सकता है। इसे सही तरीके से पहचानना अति कठिन ही है। ज्ञान, विज्ञान, प्रज्ञा, क्रोध, तन्त्र आदि माध्यमों से मनुष्य संभावित बदलाव को सूक्ष्मतम बारीकियों से पहचानने, अग्रिम जानकारियां लेने में बहुत कुछ सक्षम हो सका है। संभाविक बदलाव का पूर्वाभाव, पूर्वानुमान करने एवं रहस्य खोलने और करेक्ट अनुमान करने लगें। सदियों के ज्ञान अर्जन से यह संभव हुआ। संभावित बदलाव की गणना करने और गणना फार्मूले निरन्तर अविश्कारित हो रहे हैं। अणू, परमाणू, न्यूट्रोन, जीव, गोड पार्टीकल, गणित की अबूझ थोरम आदि खोज महत्वपूर्ण हैं। भारत के ऋिषिमुनी, आचार्य, वैज्ञानिकों का इस बारे में प्राचीन वैदिक काल एवं वर्तमान काल दानों में अति विशिष्ट भूमिका रही है। भविष्य में इस तरह के शोध कार्यों में और अधिक सहभागिता भारत की होगी।

समय बड़ा बलवान। समय के साथ संस्कार, चरित्र, व्यवहार, नीति, रीति-रिवाज, सभ्यता का प्रकार, जीवन शैली सब बदलते हैं। अनेक बार व्यक्ति को पता भी नहीं चलता है और बदलाव आ जाता है। 'अरे पता ही नहीं लगा और एक दम से ऐसा हो गया... 'ऐसे वाक्य अक्सर हम बोलते हैं। सुनते हैं।

'बदलाव' शाश्वत नियम होने पर भी बिरले ज्ञानी ही सहजता से बदलाव स्वीकार कर लेते, जान लेते हैं। हम लोग अधिकतर छिपे हुए भय से 'चेंज' से बचने की चेष्टा करते हैं। जो है वही ठीक है, बदलाव से पता नहीं क्या नुकसान हो जायेगा? डरते हैं। तैरने के लिए कूटना ही नहीं चाहते, तैरेंगे कैसे? डर के आगे जीत है। सफलता के लिए बदलाव कि क्रिया से डर को भगाना होता। बदलाव सही दिशा में अपेक्षित तरीके से हो ऐसा सुनिश्चित करना ही होगा।

बदलाव अधिकतर अच्छे अगले पड़ाव के लिए शुरू होता है। हमें डरने की बजाय चेंज के लिए योजनाबद्ध श्रम, बुद्धि प्रयोग करके उसे सफलता की और ले जाना चाहिये। परिवर्तन को भांपकर समयनुसार ऐडप्टेशन कर लेना, कर पाना ही सफलता है, और नहीं करपाना असफलता। यहां अधिकर आप व्यापारी और प्रोफेसनल हैं। मार्केट और वातावरण को सहीं भांपकर, सही अनुमान कर आप सही कदम उठाकर फायदा लाभ पा सकते हैं, या नुकसान भी पल्ले पड़ सकता है। हमारे आस-पास होने वाले बदला होने वाले बदलावों का अनुमान लगाना, अपने स्वयं एवं अपने क्रिया कलापो में योग्य बदलाव कर बदलती परिस्थितियों का अनुकूल बनाना ही मैनेजमेन्ट और प्रोफेसनल ही नहीं, साधारण किसान, मजदूर, शासक, प्रशासक सब की सफलता के लिए जरूरी है। मौके का फायदा उठाना, ओपरच्यूनीटी को केश करना, इसी को कहते हैं।

जैन शास्त्रों में दुनिया के सभी दर्शन, धर्म, सोच, फिलासफी में जैन दर्शन अत्यन्त प्राकृतिक, वैज्ञानिक और सही (सत्य) है।

चेन्ज की प्रक्रिया को परिभाषित अत्यन्त बारीकी से किया है, शायद ही किसी अन्य दर्शन के इस पहलू पर जैन दर्शन से बराबरी कर सके। प्रभु महावीर ने इसीलिए शिष्यों को, मुमुक्षों, संयमी एवं गृहस्थों को भी कहा 'क्षण भर भी प्रमाद न करे, जैसी भावना वैसा करों'। बदलते मन के भाव पर इन्तजार न करना। अच्छा उचित शुभ कार्य तुरन्त शुरू करे। चाहे वह मोक्ष की कामना हो, संयम की भावना हो, पूण्य कार्य, तप, त्याग, शुभ कार्य की बात हो। शुभ कार्य में देर न करे, बदलाव को आमंत्रण दें। डरे नहीं। अशुभ भावना, अशुभ पाप वृद्धि को रोकने में श्रेयता हैं। प्रज्ञा संस्कार अशुभ भाव एवं अशुभ कार्य में रोक लगाते हैं।

जैन धर्म-दर्शन चेंज को स्वीकारते हुये देश, काल, द्रव्य, क्षेत्र, भाव के अनुरूप प्रज्ञा जनित विवेक से करने योग्य और न करने योग्य बातों का भेद करे, देय, हेप, उपादेय आदि। इसीलिए प्रभु महावीर ने कहा- 'विवेक ही धर्म है' विवेक से सत्य की खोज ही धर्म है। सत्य मूल धर्म तत्व है। विवेक उसे खोजने का साधन। अतः बिना विवेक धर्म नहीं। सम्यक विवेक के लिए ज्ञान-प्रज्ञा चाहिए। इसलिए सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन, सम्यक चारित्र को सम्यक बदलाव का रास्ता प्रशस्त करने की बात कही गई।

इसीलिए जैन धर्म में धर्म का प्रवेश ज्ञान अर्जन से ही होता है, कराया जाता है। बिना ज्ञान धर्म नहीं, साधना भी नहीं, मुक्ति भी नहीं। जैन धर्म में अन्धभक्ति को कोई स्थान नहीं। रूढ़ीवादिता का भी कोई स्थान नहीं। व्यक्ति पूजा नहीं। गुण पूजा का महत्व है।

हम जैन श्रावक, श्राविकायें पुण्यशाली है कि हमारा धर्म इस तरह के विश्लेशण से सही, सत्य धर्म हैं। बदलाव चेंज, ऐडपटेसन स्वभाविक प्राकृतिक क्रिया है। इनसे डरे नहीं, इन्हें अपने लक्ष्यों के अनुरूप ज्ञान, प्रज्ञा, विवेक से परिष्कृत करें, सैट करें। सम्यक बदलाव से ही जीवन और जीवनोतर कल्याण संभव है।

सम्यक ज्ञान से ही चेंज की अवश्यकता, उसकी अवधारणा, उसकी वांछिता या अवांछिता करने की आवश्यकता, बदलाव प्रक्रिया तय होती है। तय करने की कसौटी, पैमाना, मापदंड, सम्यक दर्शन, सोच, प्रज्ञा और विवेक से होता है। बदलाव का व्यवहारिकता सम्यक चारित्र से ही होती, उसी से मर्यादित रहती है और उसी से समय-समय पर पुनः संशोधित परिलक्षित होती है और अगले बदलाव की भूमिका व्यवहार के बदलाव के सूत्र से ही होती है।

सीख

जीवन में तुम सत्य बोलकर, ऊंची मंजिल पाओगे।
मेहनत के बल पर तुम सारे, पर्वत लांघ जाओगे।

पढ़ लिखकर सारे जग को तुम, ज्ञान की राह दिखाओगे।
सुन्दर मीठे बोल, बोलकर, जग में नाम कमाओगे।

इसी सीख पर चलकर बच्चों, एक आदर्श बनाओगे।
खुद खुश होगे सब खुश होंगे, देश महान बनाओगे।

-डॉ. नरेन्द्र नाथ लाहा

करिश्माई पत्थर और रत्न
सेहत और संबंधों के लिए फायदेमंद

एमिथिस्ट- एक क्रिस्टल है जो अव्यवस्थित स्थितियों को व्यवस्थित कर सहयोग की भावना पैदा करता है। विपत्ति के क्षणों में यह कवच की तरह सुरक्षा प्रदान करता है। इसके प्रभाव से दिल की आंतरिक गहराइयों में छिपी भावनाएं सतह पर आ जाती हैं।

ब्लड स्टोन- यह पत्थर कई काम करता है। यह जीवन से जुड़े संकट, भय, कठिनाइयां, तनाव, चिंता आदि परेशानी को दूर करता है। इसकी सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह बिना छल-कपट के भाव लेकर आता है।

एक्वामरीन- यह स्टोन शक्ति, सुरक्षा और जटिल परेशानी में डटे रहने में मदद करता है। अगर आपको लग रहा है कि आपके जो संबंध हैं उसमें आप असुरक्षित हैं तो यह स्टोन बहुत मदद करता है।

कार्नेलियन- यह स्टोन उन लोगों के लिए काफी मददगार साबित होता है जिनका जीवनसाथी उन्हें समझ नहीं पाता। यह खराब से खराब संबंधों को ठीक करता है।

एमेरल्ड- एमेरल्ड पत्थर अक्खड़पन को दूर करता है और स्वयं को अलग नजरिए से देखने को प्रेरित करता है।

हेमाटाइट- हेमाटाइट पत्थर नकारात्मक सोच को सकारात्मक बनाता है।

मैलाशाइट- यह पत्थर संबंधों को सहिष्णु व प्रेमपूर्ण बनाने के साथ ही नकारात्मक सोच को दूर करता है।

रोजक्वार्ट्ज- यह पत्थर दूसरों का दिल जीतने में मदद करता है।

बीमारी और रत्न रूबी

स्वास्थ्य, खुशहाली, समृद्धि और आध्यात्मिक विकास में वृद्धि करता है।

माणिक- माणिक की लाल रंग की किरणें उच्च रक्तचाप व अन्य हृदय रोगों में अत्यंत लाभकारी है। इसको धारण करने से एनीमिया और शारीरिक दुर्बलता दूर होती है। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार सूर्य का मानव हृदय पर सीधा प्रभाव है।

लहसुनिया- लहसुनिया (कैट्स आई) धारण करने से चर्म रोगियों को राहत मिलती है। ज्योतिषशास्त्र में लहसुनिया को 'केतु ग्रह' का रत्न माना जाता है।

मूंगा- मूंगा (कोरल) लाल रंग का होता है। त्रिकोण कांच से देखने पर इसका रंग पीला दिखायी देता है। मूंगा ब्रह्मांड से आने वाली पीली किरणों का संग्राहक है। पीली किरणें पेट और रक्त प्रवाह से संबंधित बीमारियों को दूर करती हैं। ज्योतिषशास्त्र में मूंगा को मंगल ग्रह का रत्न माना जाता है।

मोती- मोती मानसिक अस्थिरता, चिंता व सांस जैसी बीमारियों में लाभदायक है।

हीरा- हीरे में छह रसों, मधुर, लवण, अम्ल, कटु, पित्त और कसाय का समावेश है। इस कारण जो बीमारियां वात, पित्त व कफ के असंतुलन से पैदा होती हैं उनके निवारण के लिए हीरा एक अचूक औषधि है। यौन रोगों-शुक्र व अंडाणु संबंधी बीमारियों में हीरा धारण करना हितकर सिद्ध होता है।

नीलम- नीलम मानसिक तनाव, अवसाद व स्नायु रोगों से ग्रस्त व्यक्तियों को काफी राहत प्रदान करा सकता है। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार नीलम (ब्लू सैफायर) शनि ग्रह का प्रधान रत्न है।

गोमेद- गोमेद रत्न मस्तिष्क व उदर संबंधी बीमारियों की रोकथाम में काफी लाभदायक है। ज्योतिषशास्त्र में गोमेद को राहु ग्रह का रत्न माना जाता है।

पन्ना- कैंसर के रोगी व चर्म रोग से ग्रस्त व्यक्तियों को पन्ना धारण करना चाहिए। अगर ये रोगी पन्ना धारण करेंगे तो उन्हें राहत मिलेगी।

पुखराज- पुखराज अनिद्रा व सिर दर्द से परेशान लोगों के लिए कारगर सिद्ध हो सकता है। पुखराज सिर दर्द के साथ-साथ उन्माद (हिस्टीरिया), जीर्ण ज्वर (क्रानिक फीवर), चेचक जैसी बीमारियों को दूर करने में कारगर है।

-आर.सी. शर्मा

अभिवादन गीत

-श्रीमती उषा बुच्चा भूतोड़िया

अभिवादन करते हैं हम सब, हाथ में रोली-चावल है
गुरुकुल में आनन्द हमारे, गुरुवर आपका स्वागत है
अभिवादन करते हैं हम सब, हाथ में रोली-चावल है।

वर्ष पिचत्तरवां आया तो, बगिया भी गुलजार हुई
महक रही है खुशियां हमारी, कलियां फूटी नई-नई
फूलों का हम हार लिये, माला से स्वागत करते हैं
अभिवादन करते हैं हम सब, हाथ में रोली-चावल है।

गुरुकुल में आनन्द हमारे, गुरुवर आपका स्वागत है
गीतों के स्वर लहरें गुंजे, तन-मन सबके नाच रहे
आज सारा गुरुकुल है खुश, मस्ती में आनन्द बांट रहे।
कहने को कोई बोल नहीं है, फिर भी कोशिश करते हैं
गुरुकुल में आनन्द हमारे, गुरुवर आपका स्वागत है
अभिवादन करते हैं हम सब, हाथ में रोली-चावल है।

कहानी

वेताल पच्चीसी-12

हिन्दी कथा-साहित्य में बेताल पच्चीसी की अपनी अलग पहचान है। इन कथाओं में नीति, संस्कृति और जीवनोपयोगी शिक्षाएं हैं। उसी की एक-एक कथा पढिये हर अंक में। *-गतांक से आगे*

किसी जमाने में अंगदेश में यशकेतु नाम का राजा था। उसके दीर्घदर्शी नाम का बड़ा ही चतुर दीवान था। राजा बड़ा विलासी था। राज्य का सारा बोझ दीवान पर डालकर वह भोग में पड़ गया। दीवान को बहुत दुःख हुआ। उसने देखा कि राजा के साथ सब जगह उसकी निन्दा होती है। इसलिए वह तीरथ का बहाना करके चल पड़ा। चलते-चलते रास्ते में उसे एक शिव-मंदिर मिला। उसी समय निछिदत्त नाम का एक सौदागर वहां आया और दीवान के पूछने पर उसने बताया कि वह सुवर्णद्वीप में व्यापार करने जा रहा है। दीवान भी उसके साथ हो लिया।

दोनों जहाज पर चढ़कर सुवर्णद्वीप पहुंचे और वहां व्यापार करके धन कमाकर लौटे। रास्ते में समुद्र में दीवान को एक कल्पवृक्ष दिखाई दिया। उसकी मोटी-मोटी शाखाओं पर रत्नों से जुड़ा एक पलंग बिछा था। उस पर एक रूपवती कन्या बैठी वीणा बजा रही थी। थोड़ी देर बाद वह गायब हो गयी। पेड़ भी नहीं रहा। दीवान बड़ा चकित हुआ।

दीवान ने अपने नगर में लौटकर सारा हाल कह सुनाया। इस बीच इतने दिनों तक राज्य को चला कर राजा सुधर गया था और उसने विलासिता छोड़ दी थी। दीवान की कहानी सुनकर राजा उस सुन्दरी को पाने के लिए बेचैन हो उठा और राज्य का सारा काम दीवान पर सौंपकर तपस्वी का भेष बनाकर वहीं पहुंचा। पहुंचने पर उसे वही कल्पवृक्ष और वीणा बजाती कन्या दिखाई दी।

उसने राजा से पूछा- तुम कौन हो? राजा ने अपना परिचय दे दिया।

कन्या बोली- मैं राजा मृगांकसेन की कन्या हूं। मृगांकवती मेरा नाम है। मेरे पिता मुझे छोड़कर न जाने कहां चले गये।

राजा ने उसके साथ विवाह कर लिया। कन्या ने यह शर्त रखी कि वह हर महीने के शुक्लपक्ष और कृष्णपक्ष की चतुर्दशी और अष्टमी को कहीं जाया करेगी और राजा उसे रोकेगा नहीं। राजा ने यह शर्त मान ली।

इसके बाद कृष्णपक्ष की चतुर्दशी आयी तो राजा से पूछकर मृगांकवती वहां से चली। राजा भी चुपचाप पीछे-पीछे चल दिया। अचानक राजा ने देखा कि एक राक्षस निकला और उसने मृगांकवती को निगल लिया। राजा को बड़ा गुस्सा आया और उसने राक्षस का सिर काट डाला। मृगांकवती उसके पेट से जीवित निकल आयी।

राजा ने उससे पूछा कि यह क्या माजरा है तो उसने कहा- 'महाराज, मेरे पिता मेरे बिना भोजन नहीं करते थे। मैं अष्टमी और चतुर्दशी के दिन शिव पूजा यहा करने आती थी। एक दिन पूजा में मुझे बहुत देर हो गयी। पिता को भूखा रहना पड़ा। देर से जब मैं

घर लौटी तो उन्होंने गुस्से में मुझे शाप दे दिया कि अष्टमी और चतुर्दशी के दिन जब मैं पूजन के लिए आया करूंगी तो एक राक्षस मुझे निगल जाया करेगा और में उसका पेट चीरकर निकला करूंगी। जब मैंने उनसे शाप छुड़ाने के लिए बहुत अनुनय की तो वह बोले- 'जब अंगदेश का राजा तेरा पति बनेगा और तुझे राक्षस से निगली जाते देखेगा तो वह राक्षस को मार देगा। तब तेरे शाप का अन्त होगा।

इसके बाद राजा उसे लेकर नगर में आया। दीवान ने यह देखा तो उसका हृदय फट गया। और वह मर गया।

इतना कहकर वेताल ने पूछा- हे राजन्! यह बताओ कि स्वामी की इतनी खुशी के समय दीवान का हृदय फट गया?

राजा ने कहा- इसलिए कि उसने सोचा कि राजा फिर स्त्री के चक्कर में पड़ गया और राज्य की दुर्दशा होगी।

राजा का इतना कहना था कि वेताल फिर पेड़ पर जा लटका। राजा ने वहां जाकर फिर उसे साथ लिया तो रास्ते में वेताल ने यह कहानी सुनायी। **-क्रमशः**

अभिनंदन गीत

-संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

आज मिलजुल कर हमें उत्सव मनाना चाहिए
खुशियों के पावन प्रभात में गीत गाना चाहिए

धन्य वह जननी कि जिसने रत्न धरती को दिया
सार्थक जीवन बनाने का जतन सबको दिया
उस ममता ममी माता का प्रति पल मोल बढ़ाना चाहिए

धन्य है वह देश जिसमें संत तुम सम घूमते
धन्य है वो लोग जो चरणों को तेरे चूमते
तन मन ये जीवन भेंट चरणों में चढ़ाना चाहिए

बन स्वयं आलोकमय आलोकजग को बांटते
कष्ट दुःखियों के सदा दुःख आप सहकर काटते
श्रद्धा के दीप चरणों में नितनित जलाना चाहिए।

मुदित है यह संघ सारा धन्य छाया के तले
आपके ही शरण में पलता रहा पलता रहे
युग युगों तक हमको ये नेतृत्व पाना चाहिए।।

इस धरा को खुल के अपना भाग सराना चाहिए
इस धरा को चार चांद से नभ सजाना चाहिए

छाती दर्द का मतलब हमेशा 'हार्ट अटैक' नहीं

अगर आपकी उम्र चालीस से कम है व वजन सीमा के अंदर है और आप डायबिटिज और ब्लड प्रेशर के शिकार नहीं है और धूम्रपान, मदिरापान व तंबाकू सेवन के शौकीन भी नहीं हैं तो आपके छाती दर्द का दिल के रोग से संबंध होने की संभावना कम होती है।

अगर आपकी उम्र चालीस वर्ष या उससे ऊपर है और आप डायबिटीज के शिकार हैं और धम्रपान या तंबाकू (जर्दा, खैनी, चैनी या जाफरानी पत्ती, गुल) के आदी हैं और छाती में तेज चलते वक्त या सीढ़ी चढ़ने पर छाती के बायीं तरफ दर्द या हल्का भारीपन उभरता हो या थोड़ा शारीरिक व्यायाम करने पर सांस फूलने लगे तो दिल की बिमारी होने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। खास बात यह होती है कि आराम करने से या चलते वक्त रुक जाने पर छाती का हल्का दर्द व भारीपन गायब हो जाता है। दिल का दर्द चलते वक्त बायें हाथ, बांयी गर्दन व बायें जबड़े में भी उभरता है। छाती दर्द की चिंता से मुक्ति होने का एक ही रास्ता होता है, पहले अपना टीएमटी जांच करवा लें। अगर परिणाम संदेहास्पद हैं तो स्ट्रेस इको (डोब्यूटामीन इंड्यूस्ड स्ट्रेस इको यानी डीआईएसई) करवाकर हार्ट की बीमारी होने के संदेह का निराकरा करें। सबसे उत्तम जांच मल्टी स्लाइस सीटी कोरोनरी एंजियोग्राफी का है। इस विशेष एंजियोग्राफी के लिए अस्पताल में भर्ती होने की जरूरत नहीं होती है और न ही जांघ के जरिए तार डालने की आवश्यकता होती है। दिल्ली के इंद्रपस्थ अपोलो अस्पताल के सीनियर थोरेसिक एवं कार्डियो वैस्कुलर सर्जन डा. के.के. पांडेय का कहना है कि अगर आपकी उम्र चालीस से कम है व वजन सीमा के अंदर है और आप डायबिटिज और ब्लड प्रेशर के शिकार नहीं हैं और ब्लड प्रेशर के शिकार नहीं हैं और धूम्रपान, मदिरापान व तंबाकू सेवन के शौकीन भी नहीं हैं तो आपके छाती दर्द बिशेषकर दायीं तरफ है ओर नार्मल सांस लेने में या छींक या खांसी होने पर छाती दर्द उभरता है तो दिल के रोग की संभावना सौ में से पांच फीसदी होती है। अगर गरिष्ठ, मिर्च युक्त मसालेदार खाने के बाद ही छाती में दर्द उभरता है तो दिल के रोग की संभावना कम होती है। तब हमें दिल के अलावा अन्य रोगों से संबंधित जांच करवाने के बारे में सोचना चाहिए।

भारतवर्ष में छाती दर्द का सबसे बड़ा कारण छाती की अंदरूनी दीवारों में सूजन का होना है। जब फेफड़े के ऊपरी सतह पर स्थित झिल्ली में सूजन आ जाती है तो छाती की अंदरूनी दीवार में स्थित सूजी हुई सतह से सांस लेते वक्त रगड़ खाती है तो असहनीय दर्द होता है। इस अवस्था को मेडिकल भाषा में प्ल्यूराइटिस कहते हैं यह प्ल्यूराइटिस छाती में पानी इकट्ठा होने का शुरुआती संकेत है।

भारत में प्ल्यूराइटिस का ज्यादातर कारण टीबी का इंफेक्शन होता है। लोग छाती दर्द के लिए दर्द निवारक गोलियां का सेवन करते रहते हैं और सही जांच व इलाज के अभाव में समस्या को सही समय पर नियंत्रित न किया गया तो छाती में फेफड़े के चारों ओर पानी इकट्ठा हो जाता है।

छाती में मवाद यानी पस जमा हो जाने की घटना बहुत आम है। होता यह है कि न्यूमोनिया या अन्य फेफड़े का इंफेक्शन जब पूरी तरह से नियंत्रित नहीं हो पाता है तो फेफड़े के चारों ओर विशेषतः निचले हिस्से में इंफेक्शन वाला पानी या मवाद (पस) इकट्ठा हो जाता है। इस एकत्र हुये पस की मात्रा कम तो होती है पर महीनों दिए जाने वाले तरह-तरह के एंटीबायोटिक का असर नहीं होता है। यह छाता में पस का जवाव छाती दर्द का बड़ा ही महत्वपूर्ण कारण है। आराम तलब दिन चर्या का गर्दन व छाती के ऊपरी हिस्से की रीढ़ की हडिड्यों पर कुप्रभाव पड़ता है। व्यायाम के अभाव में इन रीढ़ की हडिड्यों के जोड़ काफी सख्त हो जाते हैं और उनमें लचीलापन खत्म हो जाता है जिसके परिणामस्वरूप रीढ़ की हड्डी से हाथ, कंथे और छाती के हिस्से में जाने वाली नसों पर दबाव पड़ने लगता है जिसके फलस्वरूप छाती और हाथ में दर्द उभरने लगता है और लोग इसे दिल का रोग व संभावित हार्टअटैक गलती से मान बैठते हैं और अंजानें में अप्रत्याशित हार्टअटैक की संभावना के मद्देनजर अपनी दिनचर्या में अनावश्यक आमूलचूल परिवर्तन करते हैं जिससे उनमें आत्मविश्वास व कार्यक्षमता दोनों में ही भारी कमी आती है। आपको चाहिए आप किसी थोरेसिक यानी चेस्ट सर्जन से सलाह लें। अक्सर नवयुवक व नवयुवतियां छाती में दर्द सामने की ओर ज्यादा होता है। यह दर्द पसलियों का होता है जो छींक या खांसी आने पर और बढ़ जाता है। इस रोग को मेडिकल भाषा में पसलियों की 'कोस्टो कोंड्रायटिस' कहते हैं। अक्सर वे लोग जो दूध का नियमित या नहीं के बराबर सेवन करते हैं इस बीमारी के शिकार होते हैं। आजकल देखा गया है कि खून में विटामिन-डी की मात्रा कम होने से भी पसलियों की बीमारी व छाती दर्द होता है। अगर आप प्रोटीन युक्त संतुलित भोजन व विटामिन से भरपूर सलाद (न्यूनतम तीन सौ ग्राम प्रतिदिन) व फल (300 ग्राम रोजाना) और आधा लीटर बिना मलाई वाला दूध का सेवन प्रतिदिन करते हैं तो पसलियों की इस बीमारी व छाती दर्द से कोसों दूर रहेंगे। कुछ लोगों को ठंडे खाद्य पदार्थों जैसे कढ़ी, रायता, आइसक्रीम व दही-बड़े के सेवन करने से छाती में दर्द उभर आता है। इसका कारण छाती की मांसपेशियों का ठंडी चीजों के प्रति अत्यधिक संवेदनशीलता है। ऐसे लोगों को चाहिए कि लगातार कई दिनों तक अत्यधिक ठंडे भोजन के सेवन से बचें।

ऐसे लोग गर्म चीजें खाएं और एक या दो दिन के लिए दर्द निवारक दवा ले लें। लोग खाद्य पदार्थों के अचार, मिर्च व मसालों का भरपूर सेवन करते हैं। इससे आंतों में सूजन व अल्सर की शिकायत होती है। छाती के अंदर स्थित खाने की नली (ईसोफैगस) में सूजन आने पर यह दिल के रोग होने या हार्ट अटैक होने की संभावना होने की याद दिलाता है। मरीज को कुछ खाने के बाद छाती के बीचों बीच भरीपन, दबाव वे दर्द महसूस होता है। शराब का सेवन भी आंतों की सूजन के लिए काफी हद तक जिम्मेदार है। कभी-कभी छाती के अंदर स्थित खाने की नली का कैंसर भी छाती दर्द का कारण होता है। हर छाती दर्द को हार्टअटैक न समझें।

-प्रस्तुति : योगी अरूण

जब से जोड़ी प्रीत गुरु से

-श्रीमती मंजुबाई जैन

गुरूदेव आपके चरणों में
मेरा ये मस्तक झुक जाता है
जब से जोड़ी है प्रीत गुरू से
मन और कही नहीं जाता है।।

प्रवचन छटा आपकी निराली है
अहिंसा के आप पुजारी हैं
सुनकर हितकारी बोल तेरे
मेरा बंजर मन लहलहाता है।।

आप विषय कषाग से अघूते हैं
नित शांत सुधारस पीते है
नयनों से प्रेम छलकता है
दर्शन आनन्द बरसता है।।

संयममय आपका जीवन है
शुभ भावों में रमता मन है
जीवन में कोई प्रमाद नहीं
मंगलमय आपकी गाथा है।।

जन्म दिवस है आज आपका
देश-विदेश में सभी मनाएंगे
भेंट कुछ देने के काबिल नहीं
आस्था के कुसुम चढाते है।।

गुरूदेव आपके चरणों में
मेरा ये मस्तक झुक जाता है
जब से जोड़ी है प्रीत गुरू से
मन और कही नहीं जाता है।।

मासिक राशि भविष्यफल, अक्टूबर 2014

○ डॉ. एन. पी. मित्तल, पलवल

मेष- मेष राशि के जातकों के लिये व्यापारे-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्ध की अपेक्षा उत्तरार्ध में अधिक लाभ दायक है। नौकरी पेशा जातकों के लिये पदोन्नति का भी योग है। कुछ जातकों के लिए नये वाहन की प्राप्ति भी सम्भव है। अपने जीवन साथी की सलाह से कार्य करें। योजना सफल होगी। स्वास्थ्य की अनदेखी न करें।

वृष- वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अवरोधों के चलते आंशिक आर्थिक लाभ की सम्भावना है। कुछ जातकों के भूमि भवन के क्रय-विक्रय का पंसग आ सकती है। कुछ जातकों को शुभ समाचारों की प्राप्ति हो सकती है। कुछ जातकों का साझेदारी में आया अवरोध भी दूर हो सकता है। पूराने विवादों का समाधान भी संभातित है।

मिथुन- मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह श्रम साध्य लाभ दिलाने वाला है। जितना परिश्रम करेंगे तदनुसार लाभ भी होगा। परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। मित्र सहायक सिद्ध होंगे। संतान की ओर से कोई खुशी की खबर मिल सकती है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा।

कर्क- कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आर्थिक रूप से अस्थिरता लिये हुए है। कई प्रकार की बाधाएं आयेंगी जिससे मनसिक चिन्ता बनी रहेगी किन्तु आप बाधाओं को पार करने में समक्ष रहेंगे। कुछ नौकरी-पेशा जातकों का स्थान परिवर्तन या पदोन्नति के साथ स्थान परिवर्तन संभावित है।

सिंह- सिंह राशि के जातकों के लिए व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्ध से उत्तरार्ध में अच्छा है। जहां आर्थिक क्षेत्र में लाभ होगा वहीं भूमि भवन के क्रय-विक्रय को भी कोई प्रसंग आ सकता है। हां यात्रओं के सम्बन्ध में कोई अवरोध सम्मानित है। मित्र समय पर काम आयेंगे। परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। स्वास्थ्य का ख्याल रखें।

कन्या- कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह परिश्रम अधिक और लाभ होने का है, यह वर्ग सरकारी अधिकारियों के कारण परेशान रह सकता है। वैसे कारोबार में वृद्धि होगी। नौकरी पेशा जातकों के लिये माह का उत्तरार्ध अच्छा है। कोर्ट-कचहरी के मामले में निर्णय आपके हक में हो सकता है। मधुमेह के रोगी यात्रा के दौरान सतर्क रहें। कुछ जातकों को पुरखों की जायदाद से लाभ हो सकता है।

तुला- तुला राशि के लिए जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आय कम और व्यय के अधिक होने का है जिसमें अंकुश लगाने की आवश्यकता है। अनावश्यक क्रोध से बचें हां कुछ जातकों को विदेशी संबन्ध से लाभ सम्भावित है संतान की ओर से काई खुशी मिल सकती है। स्वास्थ्य की ओर से विशेष सचेत रहें। अपने जीवन साथी के रोग को बढ़ने न दें। तुरन्त डॉक्टर से परामर्श करें।

वृश्चिक- वृश्चिक राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्ध की अपेक्षा उत्तरार्ध में अधिक शुभफल दायक है। शुभ कार्यों में रूचि बनी रहेगी। कुछ अच्छे लोगों से मुलाकात लाभप्रद रहेगी। परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। मित्र सहयोग करेंगे। समाज में मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी। किसी के मामले ये आनावश्यक रूप से टांग न अड़ायें। सेहत सामान्य रहेगी। हां चोटदि लगने का भय अवश्य है, सावधान रहें।

धनु- धनु राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह उत्तरार्ध की अपेक्षा पूर्वार्ध में अच्छा है। कोई शुभ समाचार मिल सकता है। श्रेष्ठजनों से मिलाप होगा। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। नई योजना का क्रियान्वयन भी सम्भव है। हाँ किसी कानूनी पचड़े में न पड़े इस माह मित्रों से ज्यादा उम्मीद न रखें। परिवार में जैसे तैसे सामन्जस्य बन ही जायेगा।

मकर- मकर राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आर्थिक स्थिति में आंशिक सुधार लायेगा। अवरोधों का सामना करना पड़ेगा। यहाँ तक भाई बन्धु भी खिलाफ हो सकते है। धर्म में रूचि बनी रहेगी। कुछ बड़े लोग सम्पर्क में आ सकते हैं। धर्म कर्म में रूचि बनी रहेगी। कुछ बडे लोग सम्पर्क में आ सकते हैं।

कुम्भ- कुम्भ राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह शुभ फल दायक नहीं कहा जायेगा। आप अपने रास्ते में आ रही बाधाओं को पार करने में समक्ष होंगे। आपके शत्रु परास्त होंगे। कुछ जातकों को नये वाहन की प्राप्ति हो सकती है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। संन्तान की ओर से भी कोई शुभ सूचना मिल सकती है।

मीन- मीन राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आय कम व व्ययधिक्य रहने का है। जिससे मानसिक चिन्ता बनी रहेगी। लेन-देन के मामलों में सावधाानी बरतें। परिवार में सामन्जस्य बिठाना टेढी खीर होगी। सन्तान की ओर से कोई शुभ समाचार मिल सकता है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। समाज में यश मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

-इति शुभम्

अनंत से जुडें, अनंत मिलेगा

जन्म-दिवस-समारोह पर पूज्य आचार्यश्री का संदेश

22 सितम्बर 2014 पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्रजी का पावन पचहत्तरवां जन्म-दिवस। जीवन के पचहत्तर बसंत पार करके पूज्यवर आज छिहत्तरवें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। उसी उपलक्ष्य में 21 सितम्बर 2014, रविवार को जैन आश्रम, मानव मंदिर मिशन द्वारा एक विशेष आयोजन रखा गया, जिसमें दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, उत्तरप्रदेश आदि राज्यों के प्रतिनिधियों ने पूज्य गुरूदेव के चरणों में अपनी विनयांजलि प्रस्तुत की।

पूज्यवर के मंत्रोचार के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री की ओर से साध्वी-समुदाय ने वर्धापना-गीत प्रस्तुत किया। गुरूकुल की बालिकाओं द्वारा अभिवंदना गीत, शब्द-चित्र द्वारा पूज्यवर की जीवन-झांकी तथा हृदय का उल्लास और खुशियां प्रकट करनेवाली सुमधुर कव्वाली-गीत से उपस्थित जन-समुदाय पूरी तरह आनंद सागर में हिलोरें लेने लगा। अस्वस्थता के उपरांत भी पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी की पूरे कार्यक्रम में उपस्थिति से सभी के दिलों में प्रसन्नता स्वयं मुखर थी। मातृस्वरूपा साध्वीश्री चांदकुमारीजी ने साध्वी-समुदाय की ओर से पूज्यवर को शालार्पण करते हुए दीर्घायु की मंगल-कामना की। सूरत, गुजरात से समागत श्रीमती उषा बाई बुच्चा ने सुमधुर भजन के साथ स्वलिखित पचहत्तर सूक्तियों का संकलन पूज्यवर को भेंट किया। यशस्वी साहित्यकार डॉ. विनीता गुप्ता ने पूज्यवर के जीवन-प्रसंगों पर हस्त-लिखित पचहत्तर छंदों को पूज्या साध्वीश्री के हाथों पूज्यवर को समर्पित किया। मानव मंदिर गुरूकुल के वेलफेयर ऑफिसर फरीदुद्दीन खान (फरीद) ने पूज्य गुरूदेव को प्याला और कलेन्डर भेंट किया, जिसमें गुरूदेव जी के जीवन-प्रसंग से जुड़े चित्र चित्रित है। दिगम्बर जैन समाज तथा भोगल-आश्रम, हिसार दिगम्बर जैन समाज इस अभ्यर्थना-कार्यक्रम में विशेषतः शामिल था।

पूज्य गुरूदेव ने अपने उद्‌बोधन-प्रवचन में कहा- आज मैं मेरी जीवन-यात्रा के पचहत्तरवें पड़ाव पर हूं। आप सब दूर-सुदूर क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हुए अपनी शुभेच्छाएं, मंगल भावनाएं तथा शुभ कामनाएं प्रदान करने यहां पहुंचे हैं। देश-विदेश से Happy Birthday तथा जन्म-दिवस मंगलमय हो के टेलीफोन-संवाद भी निरंतर मिल रहे हैं। आप सबकी मंगल भावनाओं का सम्मान करते हुए मैं इतना ही कहना चाहूंगा- आज जिस यशस्वी तेजस्वी मुकाम पर मैं खड़ा हूं, वह प्रभु-कृपा तथा आपकी सदिच्छाओं, मंगल भावनाओं एवं उदार सहयोग का ही परिणाम है। इस प्रसंग पर मैं पंथ-मुक्त अध्यात्म-पथ तथा शिक्षा-सेवा मिशन के लिए अपना शेष जीवन समर्पित करने का दृढ संकल्प दुहराता हूं।

अभी-अभी तीन माह की विदेश-यात्रा से लौटा हूं। शिष्य योगी अरूण तथा शिष्य वैद्य

सोहनवीर इस सफल यात्रा में सहयोगी रहे। पूरे अमेरिका तथा कनाडा में अध्यात्म, योग तथा आयुर्वेद की प्रभावशील गूंज रही। भारत में आज भी हमारा समाज पंथ-संप्रदायों और मान्यताओं/परंपराओं की जंजीरों से मुक्त नहीं हो पाया है। इसलिए हमारी आध्यात्मिक विरासत तथा भारतीय विद्याएं भी इनमें विभाजित हो गई हैं। पश्चिम जगत इन लौह-जंजीरों से काफी हद तक मुक्त है। उसी का परिणाम है हमारी जहां-जहां, जिन-जिन महानगरों में यात्राएं हुईं, अध्यात्म-प्रवचन तथा योग-आयुर्वेद की एक प्रभावशील लहर आपको सर्वत्र मिलेगी। भारत के धर्म-जगत को कहना चाहूंगा-

संघ की नहीं संत की बात कीजिए
वैर-विरोध के अंत की बात कीजिए
पंथ ने बनाया है जीवन को पतझर
अब हरे-भरे बसंत की बात कीजिए।

आपने कहा- पर्व-आराधना के पश्चात् संघ/संप्रदायों के मंच से क्षमा और मैत्री के गीत तो खूब गाये जाते हैं, किंतु जीवन-आचरण में वे दिखाई क्या नहीं देते हैं। वास्तविक स्थिति यह है-

शोर बहुत है सार नजर नहीं आता है
भार बहुत है आभार नजर नहीं आता है
कभी तो मार में भी प्यार नजर आता था,
अब प्यार में भी प्यार नजर नहीं आता है।

आपने कहा- मैं आपको न किसी पंथ परंपरा से, न किसी व्यक्ति या मान्यता से जोड़ना चाहता हूं। मैं चाहता हूं आप अपने से जुडें। आप जिस दिन अपने से जुड जाएंगें, भीतर के प्रभु से स्वयं जुड़ जाएंगे। हम जिससे जुडेंगे, हमें वही मिलने वाला है-

पंथ से जुड़ेंगे, पंथ मिलेगा।
संत से जुडेंगें, संत मिलेगा,
उतरकर भीतर की गहराइयों में
अनंत से जुड़ेंगे, अनंत मिलेगा।

आप अपनी अनंत शक्तियों को पहचानें। योग-ध्यान अभ्यास से उसको जागृत करें। सेवा-संवेदना से जुडें। आज का मेरा यही संदेश है। आज तक मेरे मिशन को आप सबने जो प्यार और सहकार दिया है, उसके लिए बहुत-बहुत साधुवाद।

इस प्रसंग पर योगी अरूण ने पूज्य गुरूदेव के प्रति विदेश में श्रद्धा-समर्पण तथा योग-आयुर्वेद के विलक्षण प्रभाव पर प्रकाश डाला। और कहा- यह सब पूज्य गुरूदेव के आशीर्वाद से ही संभव हो पाया।

खचाखच भरे हाल के भीतर तथा बाहर जन-समुदाय जन्मोत्सव के उल्लास में समय-समाधि में डूबा हुआ था। तभी मिशन को मजबूती प्रदान करने वाले हाथ आगे आए और अनुदान-राशि के लिए उत्साह उमड़ पड़ा। श्रीमती मंगली बाई बुच्चा, सूरत की ओर से श्री हंसराजजी उषा बुच्चा, विशेष कारणों से अनुपस्थित होते हुए भी अपने भजन तथा अनुदान से उपस्थिति दर्ज कराते हुए श्रीमती मंजुबाई जैन, डॉ. एस.के. गर्ग, श्री कनकमल सरला सिंघी, श्री शीतलकुमारजी रवि जैन, श्री सुभाषजी प्रियंवदा तिवारी, इसी अवसर पर अपनी स्वर्गीय मातुश्री संरक्षक शिरोमणि श्रीमती सुवटीबाई दूगड़ की अंतिम इच्छा का सम्मान करते हुए श्री अशोकजी सुनीता चोरड़िया जयपुर ने अपनी अनुदान-राशि भिजवाई। श्री सज्जनराज जी मजुंबाई जैन (नोएडा), श्री कनकमलजी सरला सिंघी (दिल्ली), श्री सुमेरमल निर्मला पुगलिया, श्रीमती शशि जावा, श्रीमती अरूणा मेहता, श्री महेन्द्र कुमार जी बोथरा, श्रीमती दिव्या जैन, श्री एन.के. जैन, श्री सुरेन्द्र वीणा जैन, श्री राकेश मंजु जैन, श्री ओम प्रकाश जी जैन, श्री जयपाल जी जिन्दल, श्री मनीष जी गुप्ता, श्री राजेन्द्र जी प्रदीप शर्मा, श्री विजय कुमार जी निर्मला गोयल, लायन्स क्लब की बहिनें, श्री शैलेन्द्र कुमार झा, श्री कमलसिंहजी विमलसिंह बैद, (लाडनूं), श्री रामकुमारजी प्रधानजी, श्री मांगीलालजी निन्नी बाई लूणिया। समाजसेवी श्री मदनजी कृष्णा केडिया (सिरसा), श्री रामनिवासजी शांति केडिया (सिरसा), श्री नरेन्द्र कुमार जी मधु तायल (हिसार) आदि की श्रद्धा-सिक्त अनुदान-घोषणा जैसे कह रही थी कि पूज्य गुरूदेव के मिशन को ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए हम कृत-संकल्प हैं। प्रतिमाह अपनी सेवाएं देने वाले श्री जयपालजी जिन्दल, श्री मनीष जी तनु गुप्ता (दिल्ली), श्री महेन्द्रजी मंजूबाई अग्रवाल, श्री रामफल महावीर बाबू (हरिकिशन नगर दिल्ली), श्री सुरेन्द्र कुमार गुप्ता, (दिल्ली) आज के जन्मोत्सव-भंडारा सुस्वादु प्रसाद की सेवा सेवाभावी श्री विजयकुमार निर्मला गर्ग (हिसार) की ओर से रही। इस प्रकार यह जन्मोत्सव कार्यक्रम सभी को हर्ष-उल्लास में सराबोर कर गया। **समारोह का संयोजन साध्वी समताश्री जी ने किया।**

पूज्य गुरूदेव की विदेश-यात्रा-डायरी (3)

कनाडा टोरंटो-लंदन, ऑटेरियो के प्रभावनापूर्ण प्रवास के पश्चात् पूज्य गुरूदेव को पर्युषण-आराधना के लिए लॉस एंजिलस, केलिफोर्निया पहुंचना था, जहां 20 अगस्त से 31 अगस्त तक के अत्यंत व्यस्थ कार्यक्रम तय हो चुके थे। कनाडा से अमेरिका वापस आने के लिए इमिग्रेशन में से गुजरना जरूरी होता ही है। पूज्य गुरूदेव का इमिग्रेशन आसानी से हो गया। लेकिन योगी अरूण को सिक्योरिटी रूम में गहन पूछताछ के लिए रोक लिया गया। उनका तीखा प्रश्न यही था कि अभी आप पंद्रह दिन पहले ही अमेरिका विजिट करके आये हो, अब इतनी जल्दी वापस जाने का उद्देश्य क्या है। योगी अरूण ने उन्हें बहुत

आश्वस्त करने की कोशिश की मैं अपने गुरूदेव के साथ सहयोगी हूं, अमेरिका में गुरूदेव के अनेक सेंटर हैं, जहां अभी कार्यक्रम होने हैं, उन-उन सेंटरों के आमंत्रण-पत्र भी मेरे पास हैं, इसलिए मेरी अमेरिकी-यात्रा जरूरी है। उन्हें सारे पेपर भी प्रस्तुत किए किंतु वे टस-से-मस नहीं हो रहे थे। फ्लाइट की उड़ान में केवल पन्द्रह मिनट रह गए थे। अरूणजी ने गुरूदेव को मोबाईल पर संदेश भी बड़ी चतुराई से भेजा, क्योंकि सिक्योरिटी रूम में कोई भी इलेक्ट्रोनिक डिवाइस के प्रयोग की सख्त मना होती है, फिर भी उन्होंने बहुत कुशलता और चतुराई से गुरूदेव के मोबाईल पर संदेश भेजा। गुरूदेव आप पधार जाएं। मुझे नहीं पता, यहां मुझे कब तक रुकना पड़ेगा।

पूज्य गुरूदेव फ्लाइट के गेट पर पहुंचे। गेट बन्द होने जा रहा था। फ्लाइट-गेट पर खड़े व्यक्ति से कहा- मेरे सहयोगी इमीग्रेसन रूम में है, अगर थोड़ा विलम्ब हो तो प्लीज आप सहयोग करेंगे। फ्लाइट उड़ने का समय हो गया। गेट बन्द कर दिये गए। प्लेन उड़ान भरने को था, पूज्य गुरूदेव अपनी सीट पर बैठे मन-ही-मन प्रभु-स्मरण में लगे थे। अचानक आंख खोली तो शिष्य अरूण सामने थे। अरुण ने बताया- इमीग्रेसन रूम में उनके हाव-भाव से नहीं लग रहा था मुझे अमेरिका-वापसी की इजाजत मिलेगी। तभी मैंने आपको बेग के अन्दर हाथ डालकर फोन पर अनुमान से मेसेज किया। उसके बाद इमिग्रेशन-सिक्योरिटी पर्सन ने एक-दो और प्रश्नों के साथ अनुमति दे दी। मैं भागा-भागा फ्लाइट-गेट पर पहुंचा। गेट तो बन्द हो चुका था। लेकिन मैंने ज्योंही आपके बारे में बताया, उन्होंने प्लेन के गेट को फोन करके जैसे-तैसे खुलवाया और मैं आपके सामने हूं। पूरे घटना-क्रम पर न पूज्य गुरूदेव को विश्वास हो रहा था और न योगी अरूण को। किन्तु प्रभु-कृपा साथ हो तो असंभव भी संभव बन जाता है।

लॉस-एंजिलस, केलिफोर्निया में पर्युषण-आराधना

22 सितम्बर को पर्युषण-पर्व के शुभारंभ को देखते हुए पूज्य गुरूदेव 20 सितम्बर को ही लॉस एंजिलस पधार गए, क्योंकि 21 सितम्बर से पर्युषण-प्रवचन-माला का आरंभ होना था। एअर-पोर्ट पर सुप्रसिद्ध समाज सेवी श्री महेन्द्र सिंह जी डागा के सुपुत्र होनहार सुनीलजी डागा तथा उनके भान्जे रोहित जैन ने पूज्यवर की अगुवानी की। नौ-दिवसीय प्रवचन-माला का आरंभ करते हुए पूज्यवर ने कहा- यह पर्व आत्मा की आराधना का पर्व है, अहिंसा और क्षमा-याचना का पर्व है। हम तप, जप और संयम से तन-मन को साधें, पूजा और ध्यान-साधना से भीतर बिराजमान परमात्मा को आराधें, अंतःकरण से क्षमा ले-देकर मन की गांठें खोलें, इस पर्व की यही प्रेरणा है।

जैन सेंटर ऑफ सदर्न केलिफोर्निया, इन्टरनेशनल महावीर जैन मिशन तथा सनातन हिन्दू मंदिर द्वारा आयोजित पूज्यवर के आत्म-स्पर्शी प्रवचनों तथा शिष्य अरूण योगी के

प्रभावशाली योगा-प्रशिक्षण कार्यक्रमों से पूरे भारतीय समुदाय में एक नए धर्म-जागरण की लहर पैदा हो गई। पर्युषण-आराधना में हजारों की संख्या में उपस्थिति लगभग पचास अठाई तप तथा एक डेढ माह का तप, सामूहिक प्रतिक्रमण, सारे गिले-शिकवे झटकते हुए परस्पर क्षमा-याचना, सर्वत्र एक अद्‌भुत आध्यात्मिक नजारा तथा रोग-मुक्ति के लिए योग-प्राणायाम का अचूक प्रभाव- हर ओर हर जुबां पर यही चर्चा थी। मानव मंदिर मिशन के शिक्षा-सेवा तथा आयुर्वेद-चिकित्सा के लिए भी प्रेरक भूमिका बनी। भविष्य में मानव मंदिर मिशन के लिए भरपूर संभावनाएं नजर आती हैं।

श्रद्धा-समर्पित श्री सुन्दर शारदा जैन की भाव भरी प्रार्थना को देखते हुए चार दिनों का शिकागो-प्रवास बहुत आनंददायी रहा। वहां से न्यूयार्क स्टेट की राजधानी अलबनी में दो-दिवसीय प्रवास में योग-ध्यान तथा प्रवचनों में समाज ने पूरा लाभ उठाया। इस शहर में भारत के सभी धर्मों के देवी-देवताओं का एक ही Combined Temple अपने में सर्व-धर्म-समन्वय का एक अनुकरणीय उदाहरण है। दक्षिण भारत की मंदिर-शैली में बना हिन्दू कल्चरल सेंटर में सभी धर्मों के देवता अत्यंत प्रेम-सौहार्दपूर्ण वातावरण में सभी भक्त-जनों को एक समान आशीर्वादात्मक आध्यात्मिक संदेश प्रदान करते हैं। आलवनी-प्रवास में एक प्रवचन तथा योग-कक्षा हिन्दू कल्चरल सेंटर-हाल में तथा एक प्रवचन तथा योगाभ्यास ग्लोब्जवर्ग, डॉ. वंशी सुशीला मेहता के आवास पर रहा। यह मेहता-परिवार पूरे समाज में अपनी विशेष पहचान रखता है। सरल-स्वभावी सेवाभावी मेहता परिवार पूज्य गुरूदेव के प्रति बहुत ही श्रद्धा-समर्पित है। महानगर से बहुत दूर शांत एकांत हरे-भरे खेतों के बीच मेहताजी का आवास ऋषि-आश्रम जैसा ही लगता है।

8 सितम्बर को पूज्यवर हडसन नदी के किनारे-किनारे यात्रा का आनंद लेते हुए महानगर न्यूयार्क पधार गए। इस विदेश-यात्रा का यह अंतिम पड़ाव है। पूरे तीन माही विदेश-प्रवास में न्यूयार्क महानगर में इस बार पूज्यवर का यही सात दिवसीय प्रवास इस महानगर को मिल पाया है। इसमें एक धर्म-चर्चा श्रीमद् राजचन्द्र-ग्रुप के बीच डॉ. मुकेश दीना अजमेरा के आवास पर रही। एक विशेष प्रवचन तथा योगाभ्यास न्यूयार्क से सटे हुए न्यूजर्सी में युवा-हृदय श्री जितेन्द्र रूचि कोठारी के आवास पर रहा, जिसमें अच्छी संख्या में आसपास के प्रबुद्ध लोगों की उपस्थिति रही। न्यूयार्क-प्रवास में हर वर्ष एक विशेष प्रवचन समाज-सेवी श्री के.के. मेहता के लौंग-आइलैण्ड आवास पर रहता है, जहां राजस्थानी समाज विशेषतया प्रवास रहता है। इस बार वह प्रवचन तथा योगा-कार्यक्रम उनके ही बहनोई श्री कनकजी-प्रभाजी गोलिया के आवास पर रहा। यहां बड़ी संख्या में जयपुर-जोधपुर समाज उपस्थित था। अपने मर्मस्पर्शी प्रवचन में पूज्य गुरूदेव ने कहा- अभी-अभी आपने पूरे उल्लास से पर्युषण-आराधना की है। तप-जप, पूजा-प्रतिक्रमण तथा दान-बोलियों

में बढ़चढकर हिस्सा लिया है। यह प्रसन्नता की बात है। मैं इतना ही कहना चाहूंगा इन सब धर्म-क्रियाओं के साथ यदि आत्म-दृष्टि जुड़ी हो तो आत्म-लाभ मिलेगा, हमारी आराधना-यात्रा परमात्मा की ओर हमें ले जाएगी। यदि ऐसा नहीं होता है तो ये सब साधन यश, नाम और प्रसिद्धि तक ही सिमटकर रह जाएंगे। हमारी भक्ति और आराधना के समय हमें बराबर स्मरण में रखना चाहिए कि दर्शन और प्रदर्शन तथा सिद्धि और प्रसिद्धि के रास्ते एक-दूसरे के बिल्कुल विपरीत दिशा में ले जाने वाले होते हैं। इस प्रसंग पर जन-समुदाय ने योगी अरूण के योगाभ्यास का भरपूर आनंद लिया। जैन सेंटर ऑफ अमेरिका के प्रेजिडेन्ट श्री राजेश शाह ने इतना कम समय मिलने पर समाज की भावनाओं को आवाज देते हुए पूज्य गुरूदेव को प्यार भरा उलाहना दिया। और अगली बार अधिक समय प्रदान करने की प्रार्थना की।

15 सितम्बर, सोमवार भारत-वापसी के लिए पूज्य गुरूदेव की अमेरिका से विदाई। श्री धनराज भाई चेतना बेन मेहता हर वर्ष की तरह आज पूज्यवर तथा उनके शिष्य अरूण योगी को विदाई देने एअरपोर्ट आए। किन्तु इस बार पूज्यवर की बिदाई के साथ वे भी भारत के लिए अमेरिका से विदाई की तैयारी में लगे हैं। श्रीमती चेतना बेन वर्षों पहले आयुर्वेद में स्नातक डिग्री ले चुकी है। इस बार भारत सरकार की NRI स्नातक छात्रों की एक विशेष योजना के तहत श्रीमती चेतनाबेन ने गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय (जामनगर) से MD के लिए एडमिशन ले लिया है। तीन वर्षों के इस अध्ययन के लिए उन्हें भारत रहना आवश्यक होगा। उनके पतिदेव धनराज भाई ने भी उन्हें पूरा सहयोग का मन बना लिया है। ऊँची पढ़ाई के लिए भारत से हजारों छात्र हर वर्ष अमेरिका जाते हैं। वहीं आयुर्वेद में मास्टर डिग्री के लिए चेतनाबेन ने भारत आने का निर्णय लिया है। बहुत-बहुत बधाई। पिछले दस वर्षों से इस परिवार ने पूज्य गुरूदेव के न्यूयार्क-प्रवास में जो अनमोल सेवायें दी हैं वह (शब्दातीत) है। बहुत बहुत अनुमोदना। 16-17 सितम्बर की रात्रि में लगभग अढाई बजे जब पूज्य गुरूदेव इन्दिरा गांधी एअरपोर्ट से बाहर पधारे तो आश्रमवासियों तथा गुरूकुल के बालकों के जय-जयनाद से पूरा एअरपोर्ट-परिसर गूंज उठा। लगभग तीन बजे पूज्यवर जैन आश्रम पधारे, जहां पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी अपनी साध्वी-समुदाय तथा पूरे आश्रम-परिवार के साथ पलक-पांवडे बिछाये पूज्यवर की इन्तजार कर रही थी। पूज्य गुरूदेव तथा पूज्या प्रवर्तिनी का मिलन बड़ा हृदय-स्पर्शी था। गुब्बारों तथा कृत्रिम फूल-मालाओं से सजा-धजा एवं रोशनी से जगमग पूरा आश्रम-परिसर दीपावली का नजारा उपस्थित कर रहा था। बालक-बालिकाओं ने मंगल आरती तथा साध्वी-समुदाय ने मंगल गीत से पूज्यवर की अभिवंदना की। इस प्रकार 16-17 रात्रि, जून 2014 से आरंभ पूज्यवर की यशस्वी धर्म-यात्रा ठीक तीन माह पश्चात् 16-17 रात्रि, सितम्बर 2014 को संपन्न हो गई।

-पूज्य गुरूदेव मंत्रोचार के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए साथ में हैं योगी अरूण, वैद्य सोहनवीर एवं मानव मंदिर गुरूकुल के विद्यार्थी।

-मानव मंदिर गुरूकुल की छात्राएं शब्दचित्र द्वारा पूज्यवर की जीवन झांकी प्रस्तुत करती हुई।

-गुरूदेव जी के जन्मोत्सव पर कव्वाली की विशेष प्रस्तुति द्वारा गुरूकुल की छात्राओं ने समा बांध दिया।

-पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्रजी महाराज से मंगल आशीर्वाद प्राप्त करते हुए भक्तजन।

-पूज्य गुरूदेव के पचहत्तरवें जन्मोत्सव पर शंखनाद करता हुआ नन्हा बालक उत्सव।

-साध्वी कनकलता के नेतृत्व में वर्धापना-गीत प्रस्तुत करती हुई साध्वी वसुमती, साध्वी पद्मश्री एवं गुरूकुल की छात्राएं।

-श्रीमती उषावाई बुच्चा स्वरचित भजन में पूज्यगुरूदेव के जीवन से जुड़ी पचहत्तर सुक्तियों के संकलन की सुमधुर प्रस्तुति करते हुए। साथ में हैं गुरूकुल की छात्रा कुमारी मानषी (दायें) कुमारी पिंकी (बायें)।

-डॉ. विनीता गुप्ता द्वारा पूज्य गुरूदेव के जीवन प्रसंगों पर हस्त-लिखित पचहत्तर छन्दों को पूज्या संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री ने आप को भेंट किया। साथ में डॉ. विनीता व अन्य।

-पूज्य गुरूदेव को जन्मदिवस का उपहार भेंट करने के पश्चात् भावांजलि मुद्रा में साध्वी चांदकुमारी जी।

-पूज्य गुरूदेव के पचहत्तरवें जन्म-दिवस और सफल विदेश-यात्रा-वापसी समारोह कार्यक्रम का संचालन करती हुईं साध्वी समताश्री जी।

-दिगम्बर जैन मंदिर टोरंटो (कनाडा) में पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज, योगी अरूण, (बांए) हिम्मत भाई खंडूर एवं (दाएं) इस मंदिर के प्रेरणा-स्रोत श्री ज्ञानचंद्र जैन।

-योग अभ्यास करवाते हुए योगी अरूण लंदन, (कनाडा)

-योगी अरूण इंडिया हाउस ह्युष्टन (टेक्सास) में ध्यान प्रणायाम करवाते हुए।

-टोरंटो (कनाडा) जैन मंदिर में योग प्रशिक्षण देते हुए योगी अरूण तिवारी।

-सेवाभावी श्री हिम्मत भाई, श्री बाबुभाई एवं उनकी विदेशी धर्म-पत्नी पूज्य गुरूदेव के साथ।

-सनातन धर्म हिन्दू मंदिर लॉस एंजिलस के संस्थापक भीखू भाई पटेल व जन समुदाय पुज्य गुरूदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए। साथ में हैं योगी अरूण तिवारी।

जैन मंदिर टोरंटो (कनाडा) में पूज्य गुरूदेव के प्रवचनों का आनन्द लेता हुआ श्रवक-समाज।

-सनातन धर्म हिन्दू मंदिर लॉस एंजिलस में योग का प्रशिक्षण देते हुए योगी अरूण तिवारी।